

## सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-2

“ससुर जी के सामने डॉक्टर द्वारा मेरी योनि के बाल साफ़ करते समय उस पर हाथ लगाना तथा उसके होंठों को पकड़ कर फैलाते हुए उन पर रेजर चला कर बाल साफ़ करने पर मुझे बहुत संकोच होता रहा। ...”

Story By: (tpl)

Posted: Wednesday, August 1st, 2018

Categories: [हिंदी सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-2](#)

# सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-2

मेरी हॉट स्टोरी के पहले भाग

## सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-1

में आपने पढ़ा कि कैसे मेरी एक सहेली बनी, उसे मेरी कहानियों के बारे में पता चला और फिर उसने मुझे अपनी कहानी लिखने को कहा. यह कहानी मैं अपनी उसी सहेली दिव्या के शब्दों में लिख रही हूँ.

मजा लीजिये.

तीन दिनों के बाद एक सुबह अचानक ही मौसम खराब हो गया और आंधी तूफ़ान के साथ तेज़ बारिश गिरने लगी।

लगभग दस घंटे तक लगातार बरसात होने के कारण कस्बे के पास से गुज़रने वाली नदी में बाढ़ आ गयी तथा उसके तट बंध में दरार आने के कारण उसका सारा पानी कस्बे में घुस आया। बाढ़ के पानी से कस्बे के मध्य से गुज़र रहा राष्ट्रीय राजमार्ग भी जलमग्न हो गया जिस कारण उस पर से वाहनों की आवाजाही पूर्णतया बंद हो गयी। यहाँ तक की नीचे की मंजिल के घरों एवं दुकानों में पानी भर गया और एक इमारत से दूसरी इमारत में जाना भी मुश्किल हो गया था।

क्योंकि हमारी दुकान की नींव काफी ऊँची बनी हुई थी इसलिए उसके भूतल में पानी नहीं भरा था लेकिन राजमार्ग पर तेज़ पानी के बहाव के कारण यातायात बिल्कुल ठप था।

उसी रात को लगभग ग्यारह बजे मुझे प्रसव की पीड़ा शुरू हो गयी और मेरी कराहट सुन कर एवं हालत देख कर ससुर जी ने फ़ोन से डॉक्टर को संपर्क करने लगे। खराब मौसम के कारण फोन की लाइनें भी ठप पड़ गयी थी जिससे ससुर जी डॉक्टर से सम्पर्क नहीं कर पा रहे थी तथा बाहर पानी भरे होने के कारण वह उसके घर भी नहीं जा सकते थे।

रुक रुक कर मेरी पीड़ा में वृद्धि होने लगी थी जिस कारण ससुर जी ने मुझे कहा- दिव्या, हमारे घर की इमारत से डॉक्टर के घर तक की सभी इमारतें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। मैं इन सभी इमारतों की छतों से होता हुआ डॉक्टर के घर तक पहुँच कर उसे यहाँ बुला कर ला सकता हूँ। अगर तुम पाँच मिनट का समय अकेले में काट लेने को तैयार हो तो मैं उस रास्ते से जा कर डॉक्टर को ले आता हूँ।

ससुर जी की बात सुन कर मैंने पीड़ा से कराहते हुए अपना सर हिला कर उन्हें जाने की स्वीकृति दे दी।

पाँच से सात मिनट में ही ससुर जी लौट आये और बोले- दिव्या, तुम चिंता मत करो, डॉक्टर घर पर ही मिल गयी थी। तुम्हारी स्थिति के बारे में सुन कर वह दस पन्द्रह मिनट में छतों के रास्ते यहाँ आने के लिए मान गयी है।

उसके बाद डॉक्टर के निर्देशों के अनुसार ससुर जी ने एक बड़ा पतीला पानी का भर कर गैस पर गर्म करने के लिए रख दिया।

फिर उन्होंने खाने की मेज़ पर एक गद्दा बिछाया और उस पर एक चादर फैला कर उसके ऊपर मोमजामा बिछा दिया और कमरे की सभी लाइटें जला दी।

पन्द्रह मिनट पश्चात डॉक्टर आ गयी और मेरी जांच करने के बाद उसने मुझसे कहा- दिव्या, कभी कभी ऐसा हो जाता है कि प्रसव की पीड़ा अनुमानित समय से पहले या बाद में हो जाती है इसलिए तुम्हें चिंतित नहीं होना चाहिए। शिशु जन्म लेने के लिए तैयार है और हमें अब अधिक देर भी नहीं करनी चाहिए।

उस जटिल स्थिति की बात करते हुए डॉक्टर ने मुझसे कहा- खराब मौसम के कारण तुम्हारे प्रसव के समय हाथ बटाने के लिए मेरे पास ना तो कोई नर्स है और ना ही अभी आ सकती है। इसलिए तुम्हारे प्रसव में मेरी सहायता के लिए मैंने तुम्हारे ससुर से कहा है, क्या तुम्हें इसमें कोई आपत्ति तो नहीं है ?

मैंने कराहते हुए कहा- डॉक्टर, प्रसव के समय उनका यहाँ होना और मुझे पूर्ण नग्न तथा मेरे गुप्तांगों को देखना एवं उन्हें छूना मेरे लिए काफी संकोचशील होगा। लेकिन ऐसी प्रस्थिति में शायद और कोई चारा भी नहीं है इसलिए मेरे द्वारा आपत्ति करना व्यर्थ ही होगा।

मेरी बात सुन कर डॉक्टर ने मेरे हाथ पकड़ कर दबाते एवं मुझे सांत्वना देते हुए कहा- दिव्या, तुमने बहुत ही सूझबूझ की बात कही है, लेकिन मेरी विवशता है इस हालात में मुझे डॉक्टर रत्नाकर की सहायता लेनी ही पड़ रही है।

क्योंकि केमिस्ट के दुकान की एक चाबी हमेशा ससुर जी के क्लिनिक में रहती थी इसलिए डॉक्टर ने ससुर जी को क्लिनिक एवं केमिस्ट की दुकान से कुछ सामान एवं दवाइयाँ लाने को कहा।

ससुर जी के जाने के बाद डॉक्टर ने मुझे पूर्ण नग्न कर के खाने की मेज़ पर लगे बिस्तर पर लिटाया और मेरे दोनों नितम्बों में एक एक इंजेक्शन लगा कर मेरे शरीर को चादर से ढक दिया।

कुछ ही अवधि बाद ससुर जी ने सामान और औषधियाँ ला कर डॉक्टर को दे दी और क्लिनिक से लाये स्पॉट-लाइट को जला कर मेरे शरीर के नीचे के भाग को रोशन कर दिया। डॉक्टर ने एक बार फिर मुझसे कमर, गर्भाशय एवं योनि में पीड़ा आदि के बारे में पूछा तथा बच्चे की हलचल और तथा सिर की सही स्थिति ज्ञात करने के लिए मेरी जांच करी। मैंने पीड़ा को बर्दाश्त करते हुए जब उन्हें पीड़ा के बारे में सब कुछ बता दिया।

तब उन्होंने कहा- शिशु ने तुम्हारे गर्भाशय से बाहर निकलने के लिए हिल डुल रहा है इसलिए अब हमें तुम्हारे प्रसव की तैयारी करनी चाहिए।

अगले ही क्षण डॉक्टर ने मेरे शरीर के कमर से नीचे के भाग से चादर हटा कर मेरी कमर तक कर दी।

मेरी टांगों और जाँघों से चादर का आवरण हटते ही उन दोनों के सामने मेरी योनि का प्रदर्शन होने से बचाने के लिए मैंने अपनी जाँघें भींच ली।

मुझे संकोच करते देख कर डॉक्टर ने मुझे उन्हें चौड़ा करने का इशारा किया और मुझे हिचकिचाते देख कर उन्होंने बिना समय गवाएँ खुद ही जबरदस्ती उन्हें फैला दिया।

फिर डॉक्टर मेरी टांगों के बीच में आते हुए मेरे जघन-स्थल, योनि एवं गुदा तक के स्थान को गर्म पानी से भीगी रुई से पौछने लगी।

उसी समय मुझे बहुत जोर से पीड़ा हुई और मैं चिल्ला उठी तब कुछ देर के लिए डॉक्टर रुक कर मेरे पेट पर हाथ रख कर जांच कर के मुस्कराते हुए कहा- शिशु बाहर आने को बहुत उतावला हो रहा है।

जैसे ही मेरी पीड़ा कम हुई तब डॉक्टर ने रुई से साफ़ किये स्थानों पर शेविंग क्रीम लगा कर शेविंग ब्रश से फैलाने लगी।

मैं उस समय शर्म के मारे पानी पानी हो रही थी क्योंकि मेरे ससुर जी भी सामने खड़े डॉक्टर को ब्रश से मेरे जघन-स्थल, योनि एवं गुदा को शेविंग क्रीम की झाग से ढकते हुए देख रहे थी।

मैं साँस रोके इंतज़ार कर रही थी कि अब क्या होगा तभी मुझे डॉक्टर के हाथ का स्पर्श मेरे जघन-स्थल पर आभास हुआ और उसके बाद मैंने शेविंग रेज़र से वहाँ के बाल साफ़ करने की क्रिया महसूस करी।

पहले मेरे जघन-स्थल को केश साफ़ करने के बाद उन्होंने मेरे गुदा स्थल के बालों को साफ़ किया और अंत में मेरी योनि के बाल साफ़ करने लगी।

ससुर जी के सामने डॉक्टर द्वारा मेरी योनि के बाल साफ़ करते समय उस पर हाथ लगाना तथा उसके होंठों को पकड़ कर फैलाते हुए उन पर रेज़र चला कर बाल साफ़ करने पर मुझे बहुत संकोच होता रहा।

उस संकोच के कारण मैं आँखें बंदन करके लेटी रही और उस समय खोली जब डॉक्टर मेरी टांगों के बीच से हट गए।

दोनों इंजेक्शन लगे लगभग बीस मिनट हो चुके थे और शायद उसका असर शुरू हो चुका था इसलिये मुझे रुक रुक कर पीड़ा होने के बजाये अब लगातार पीड़ा होने लगी थी। जब मैंने यह बात डॉक्टर को बतायी तब उसने कहा- यह तो अच्छे संकेत हैं, अब कुछ ही समय बाद शिशु तुम्हारी गोद में होगा।

कुछ ही देर में मुझे बहुत तीव्र पीड़ा होने लगी और मेरी चीखें निकलने लगी और मैं हाथ पाँव मारने लगी।

तब डॉक्टर ने ससुर जी की सहायता से मेरी टांगों को चौड़ा करके मेरी पुरानी साड़ी से मेज़ के साथ बाँध दी और मेरी योनि के होंठों को चौड़ा करके उसके अंदर झाँक कर देखने लगी।

मुझे बहुत शर्म आ रही थी लेकिन टाँगें बंधी होने के कारण मैं योनि को ढक भी नहीं सकती थी और पीड़ा के कारण चीखें मारती जा रही थी। मुझे तीव्र पीड़ा होते हुए अभी पन्द्रह मिनट ही बीते थे तभी मुझे गर्भ के अन्दर बालक की बहुत ज़बरदस्त हलचल महसूस हुई और योनि में से कोई तरल पदार्थ बाहर निकलने का बोध हुआ।

शायद डॉक्टर और ससुर जी ने उस तरल पदार्थ को योनि से बाहर आते देख लिया था इसलिए वह दोनों उस बारे में आपस में बात करने लगे।

डॉक्टर ने उन्हें बताया- गर्भाशय के अंदर जिस थैली में बच्चा होता यह तरल पदार्थ उसी में होता है और उसके फटने से निकल कर बाहर आ रहा है। प्रसव की यह एक प्राकृतिक क्रिया है जिसका अर्थ है की बालक के पैदा होने की क्रिया शुरू हो चुकी है।

डॉक्टर की बात समाप्त होते ही अकस्मात् मुझे अत्यंत तीव्र पीड़ा के साथ शिशु को योनि

के द्वार की ओर सरकते हुए महसूस किया। मैं अत्यंत तीव्र पीड़ा के कारण तड़प कर चीख उठी और मेरे शरीर में पसीना आने लगा तब डॉक्टर ने ससुर जी से कहा- अब शिशु के बाहर आने का समय हो गया है इसलिए हमें सतर्क रहने चाहिए।

डॉक्टर ने मेरी योनि के होंठों के फैला कर उसमें झाँका और बोली- गर्भाशय के मुंह फ़ैल चुका है और उसमें से बच्चे का सिर दिख रहा है।

डॉक्टर की बात सुन कर ससुर जी भी मेरी टांगों के बीच में आ गए और जब वह मेरी योनि के अंदर झाँक कर देखने लगे तब मुझे बहुत ही संकोच होने लगा।

तभी डॉक्टर ने कहा- दिव्या, बच्चे को बाहर धकेलने के लिए जोर लगाओ और डॉक्टर आप दिव्या के पेट को नीचे की ओर दबा कर बच्चे को बाहर धकेलने में दिव्या की मदद कर दीजिये।

मेरे और ससुर जी द्वारा शिशु को नीचे की ओर धकेलने से मुझे अत्यंत पीड़ा के साथ महसूस हुआ की बालक का सिर मेरे गर्भाशय मुंह से आगे सरक कर मेरी योनि के मुंह में अटक गया था।

डॉक्टर लगातार अपने हाथों को मेरे जघन-स्थल पर रख कर अपने अंगूठों से मेरी योनि के फैला कर देख रही थी और उन्होंने शिशु का सिर योनि के मुंह में अटका देख कर ससुर जी से कुछ कहा।

मैं अत्यंत पीड़ा के कारण चीख रही थी इसलिए मुझे सुनाई नहीं दिया कि डॉक्टर और ससुर जी की उस समय क्या बात हुई थी।

अगले ही क्षण ससुर जी ने सर्जिकल ब्लेड से मेरी योनि के नीचे की ओर की त्वचा में एक टक लगा कर काट दिया जिससे शिशु का सिर मेरे शरीर से बाहर निकल आया।

तभी बालक ने अपनी टांगें हिलानी शुरू कर दी जिससे उसका शरीर भी योनि से बाहर निकलने लगा और जैसे ही उसके कंधे योनि के मुंह तक पहुंचे वैसे ही डॉक्टर ने उसे पकड़

कर बाहर खींच लिया।

बालक के बाहर आते ही डॉक्टर तुरंत उसके शरीर से जुड़ी नाल को दो जगह से बाँध कर बीच में से काट दिया।

बालक के अलग होते ही डॉक्टर ने बच्चे को टांगों से पकड़ कर लटका दिया और उसकी पीठ थपथपाने लगी।

दो हो क्षण में बच्चे के मुँह से कुछ पानी सा निकला और उसके साथ ही उसके रोने की आवाज़ पूरे कमरे में गूँज उठी।

बच्चे की आवाज़ को सुन कर जैसे ही मुझे पहली बार माँ बनने का अहसास हुआ तब मेरा मन खुशी से अभिभूत हो गया और आँखों से आंसू छलकने लगे।

तभी डॉक्टर ने रोते हुए शिशु को ले कर मेरी टांगों के बीच से हटते कर उसे नर्म सूती कपडे से साफ़ करने लगी।

कहानी जारी रहेगी.

[trishnaluthra@gmail.com](mailto:trishnaluthra@gmail.com)

कहानी का अगला भाग : [सास विहीन घर की बहू की लघु आत्मकथा-3](#)

